कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, नवम्बर 2023 | वर्ष 1, अंक 3, पृष्ठ 4

आरएलए के फ्रेशर आर्यन और तपलब्धा

राम लाल आनंद महाविद्यालय के मिस्टर फ्रेशर और मिस फ्रेशर को पुरस्कृत करते उपप्राचार्य और समारोह को संबोधित करते प्राचार्य।

कंचन गुप्ता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में पढ़ रहे सभी छात्र–छात्राएं अपने भविष्य में सदैव सफलता की राह पर चलें। उन्हें सफलता मिलेगी तो उनके अभिभावक गौरवान्वित होंगे। महाविद्यालय का नाम भी होगा। शिक्षक भी गर्व का अनुभव करेंगे। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने नए विद्यार्थियों के लिए आयोजित फ्रेशर्स पार्टी के मंच पर 14 अक्टूबर को कही।

कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के वक्तव्य से हुई, जिसमें उन्होंने नए विद्यार्थियों का स्वागत कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इसी के साथ उन्होंने महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष मनस्वी बांगड़, उपाध्यक्ष एलिना और ज्वाइंट सेक्रेटरी अर्जुन दीक्षित को मंच पर आमंत्रित करते हुए सम्मानित किया। कार्यक्रम की शुरुआत में फ्रेशर्स प्रतियोगिता रखी, जिसे तीन चरणों में कराया गया।

प्रथम वर्ष से प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को मिलाकर कुल 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पहले चरण में सभी ने रैंपवॉक करते हुए अपना परिचय दिया। दूसरे चरण में चुने गए प्रतिभागियों ने तय समय सीमा में अपनी कला का प्रदर्शन किया, जिसमें नृत्य, गायन, जादू, शायरी आदि कलाएं शामिल रहीं।

अंतिम चरण में साल 2023 के मिस्टर फ्रेशर का खिताब हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के आर्यन यादव और मिस फ्रेशर का खिताब इंग्लिश ऑनर्स की तपलब्धा चक्रवर्ती ने अपने नाम किया। साथ ही मिस्टर वेलड्रेस्ड का पुरस्कार बीएमएस से हर्ष गांधी और मिस वेलड्रेस्ड का पुरस्कार माइक्रोबायोलॉजी की दिशा तुषार को मिला।

जज की भूमिका में प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. उर्वशी कुहाड़ और डॉ. अरुण कुमार मौजूद रहे। भारतीय शास्त्रीय और लोकनृत्य समिति अनंतदृष्टि ने अपने नृत्य के विभिन्न रंगों को बिखेरा। वेस्टर्न म्यूजिक सोसाइटी ग्रासरूट और इंडियन म्यूजिक सोसाइटी दस्तूर ने अपनी गायन कला से सभी के दिलों को जीत लिया। इसके बाद राष्ट्र गान की प्रस्तुति हुई। अंत में डीजे नाइट का विद्यार्थियों ने जमकर लुत्फ उठाया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

देश के निर्माण में युवा शक्ति बने सहायक

सहायता कर जागरूक नागरिक बनें : जिले सिंह

विवेक

नई दिल्ली । युवा शक्ति को यदि सकारात्मक रूप में ढाला जाए तो देश के निर्माण में वह काफी कारगर साबित हो सकती है। देश के युवाओं को देश भक्ति के क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा योगदान देना चाहिए। यह हर युवा का कर्तव्य है। यह पंक्तियां कमांडर जिले सिंह की हैं, जिन्होंने साल 1998 में राम लाल आनंद महाविद्यालय से अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की। साथ ही निरंतर मेहनत कर जीवन में बुलंदियां हासिल की। वर्तमान में वह नार्दन सेक्टर क्विक एक्शन टीम के कमांडर हैं। देश भक्ति के प्रति इनकी अप्रतिम वीरता के परिणाम स्वरूप इन्हें शौर्य चक्र से भी सम्मानित किया जा चुका है। महाविद्यालय की गांधी स्टडी सर्कल ने 18 अक्टूबर को सेमिनार कक्ष में एक व्याख्यान का आयोजन किया। व्याख्यान का विषय 'युवा शक्ति और देश भक्ति' था, जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर जिले सिंह मौजूद रहे।

व्याख्यान में गांधी स्टडी सर्कल के संयोजक प्रो. सुभाष चंद्र डबास, सह संयोजक प्रो. संजय कुमार शर्मा, हिंदी विभाग की प्रभारी प्रो. अर्चना गौड़, डॉ. प्रज्ञा देशमुख, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. नीरा पाल सहित गांधी स्टडी सर्कल के सभी सदस्य विद्यार्थी मौजूद थे। महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। व्याख्यान से विद्यार्थी बहुत प्रभावित हुए। देश भक्ति के प्रति कमांडर जिले सिंह के विचारों ने विद्यार्थियों में देश के प्रति प्रेम की एक लौ जला दी।

मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को बताया कि अपने जीवन में आए कड़े से कड़े संघर्षों का भी कैसे उन्होंने डटकर सामना किया और किस प्रकार सुविधाओं और संसाधनों के अभाव में भी जीवन में हमेशा मेहनत को हथियार बना लिया। बहादुरी के लिए उन्हें शौर्य चक्र से नवाजा गया।

उन्होंने कहा कि हम केवल सेना में भर्ती होकर अपना देश प्रेम जाहिर नहीं कर सकते, बल्कि चुनावों में सूझ–बूझ से वोट देकर, जागरूक नागरिक बनकर, दूसरों की सहायता करके भी हम जागरुक नागरिक का परिचय दे सकते हैं और देश के प्रति अपना फर्ज निभा सकते हैं।

आंकड़ों का उपयोग देखें

सवालों के जरिए विद्यार्थियों ने दूर की जिज्ञासा

हर्षित

नई दिल्ली। दिल्ली विवि के राम लाल आनंद महाविद्यालय में सांख्यिकी विभाग की पैनेसिया समिति ने एक लेक्चर का आयोजन किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व लेखा महानियंत्रक सोमा रॉय बर्मन मौजूद रहीं। सत्र का विषय 'एप्लीकेशन ऑफ स्टैटिस्टिक्स इन गवर्नेंस एंड सर्विस डिलीवरी' था। सत्र में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

सांख्यिकी, बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, राजनीति विज्ञान विभाग सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे। अपने वक्तव्य को शुरू करते हुए सोमा रॉय बर्मन ने बताया कि सरकार आंकड़ों का कहां और किस प्रकार उपयोग करती है। बजट में आंकड़ों का मुख्य तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि सांख्यिकी के कई विभाग काम करते हैं, जिनमें केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन सम्मिलित हैं। उन्होंने इन विभागों की कार्यप्रणाली से भी विद्यार्थियों को अवगत कराया। विद्यार्थियों के लिए यह सत्र काफी जानकारीपूर्ण रहा। अंत में विद्यार्थियों ने मुख्य वक्ता के सामने अपनी जिज्ञासाएं रखीं, जिनका उन्होंने जवाब दिया। इससे पहले समिति की संयोजक डॉ. रीता जैन ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया तो धन्यवाद ज्ञापन समिति अध्यक्ष स्मारिका जैन ने दिया।

पूर्व छात्र बोले, हम सौभाग्यशाली हैं कि आरएलए से हैं

सोनिका

नई दिल्ली। हम स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं। इसलिए मानते हैं, क्योंकि हम इस महाविद्यालय से और खासकर हिंदी विभाग से जुड़े हुए हैं। जीवन में उपलब्धियों के जिस शिखर पर आज हम मौजूद हैं, उसमें हम महाविद्यालय सहित हिंदी विभाग का अहम योगदान मानते हैं। ये शब्द हिंदी विभाग के पूर्व विद्यार्थियों के हैं, जिन्हें 17 अक्टूबर को हिंदी विभाग के कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। महाविद्यालय के सेमिनार कक्ष में सुबह 10 बजे कार्यक्रम शुरू हुआ। वर्तमान हिंदी विद्यार्थियों के कैरिअर काउंसिलिंग के उद्देश्य से इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को बुलाया गया। इसमें आदित्य, किशन सरोज, रविंद्र कुमार, अमित और मिनाली गुप्ता शामिल थीं। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. अर्चना गौड़, प्रो. सुभाष चंद्र डबास, प्रो. राकेश कुमार और प्रो. संजय कुमार शर्मा इस अवसर पर मौजूद रहे।

समारोह में विद्यार्थियों को बताया गया कि किस प्रकार वह नेट व जे.आर.एफ. जैसी परीक्षा अनुशासित जीवन अपनाकर सूझ–बूझ से हल कर सकते हैं। इन विद्यार्थियों ने परीक्षा की तैयारी से संबंधित अपने निजी अनुभव बताए। इसके साथ ही विद्यार्थी किस तरह शैक्षणिक कठिनाइयों का निवारण कर सकते हैं, किन बिंदुओं पर परीक्षा के दौरान बारीकी से ध्यान दिया जाना चाहिए, इन विषयों पर भी चर्चा की। कार्यक्रम में महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'समदृष्टि' के संपादक मंडल के सदस्य विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। साथ ही साथ हिंदी विभाग ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण स्पर्धा और हिंदी भाषा व साहित्यिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया था। इन सभी प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को भी प्रमाण पत्र दिए गए।

पूर्व विद्यार्थियों के साथ प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता और अन्य अध्यापक।

चुनौतीपूर्ण रहा यह अनुभव

'कैंपस कनेक्ट' के संपादक के रूप में मेरा अनुभव चुनौतीपूर्ण रहा, लेकिन व्यक्तिगत रूप से मेरे के लिए काफी फायदेमंद रह। खबरों का संग्रह, संपादन और डिजाइन को दोहराए बिना कुछ अलग बनाना एक नए तरह की चुनौती थी। प्रत्येक अंक के लिए नया लेआउट पेश करना वास्तव में एक अच्छा अनुभव रहा। नया लेआउट प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता हमारे संपादकीय कार्य के केंद्र में है। यह अंक एक रंगीन पर्दा है जो महाविद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों को प्रदर्शित करता है। यह मिस फ्रेशर तपलब्धा और मिस्टर फ्रेशर आर्यन यादव को हार्दिक बधाई के साथ आरएलए फ्रेशर पार्टी की भव्यता का जश्न मनाता है। पैनेसिया समिति के योगदान और हिंदी विभाग पूर्व छात्र सम्मेलन की गर्मजोशी को दर्शाता है। हिंदी पत्रकारिता में 'समाचार पत्र निर्माण' कार्यशाला के दौरान साझा की गई विशेषज्ञ की अंतर्दृष्टि आजीवन सीखने के महत्व पर जोर देती है। शौर्य चक्र से सम्मानित कमांडर जिले सिंह का व्याख्यान छात्रों को कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

आदित्य कनोजिया

इसके अतिरिक्त, विभिन्न विभागों की ओर से आयोजित स्वच्छता अभियान परिसर को स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। रेडियो साक्षात्कार में भारतीय ब्लाइंड क्रिकेट टीम की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। हमने पूरी कोशिश की है कि अंक में गलतियां न जाएं, लेकिन गलती से कहीं छूट गई हो तो हमारे शिक्षक हमारा मार्गदर्शन करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। अंत में विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार का आभार कि उन्होंने हमें इस अंक को निकालने की जिम्मेदारी दी।

रत्नकुमार सांभरिया को मिला मीरां पुरस्कार

मीनाक्षी त्रिपाठी

नई दिल्ली। राजस्थान साहित्य अकादमी ने वर्ष 2023–24 के वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। इसमें रत्नकुमार सांभरिया को उनके उपन्यास 'सांप' के लिए सर्वोच्च मीरां पुरस्कार से सम्मा. नित किया जाएगा। 'सांप' उपन्यास घुमंतू समुदायों के जीवन और संघर्षों पर केंद्रित है। यह घुमंतू जाति सपेरा–कालबेलिया के जीवन, सामाजिक स्तर और उनकी दुर्दशा पर आधारित है। यह इस विडंबना को दर्शाता है कि मूल निवासी होने के बावजूद इन समुदायों के लोगों को देश की नागरिकता प्राप्त नहीं है। जन मन समिति की को. शिशों का सफल होना और नाउम्मीद में उम्मीद की किरण का जगना इसका एक अहम पहलू है। 'सांप' उपन्यास में कथाकार संवेदनशीलता का परिचय देते हुए घुमंतू जाति की बस्ती बसा देता है। जिन घुमंतुओं के पास रहने का ठि. काना नहीं था उन्हें पक्की कॉलोनी मिलती है। 'सांप' उपन्यास का आशावादी होना इसे अलग बनाता है। सांभरिया ने लघु कथाओं से अपने लेखन की शुरुआत की। इसके बाद वह कहानी विधा की ओर मुड़े। एक के बाद एक कहानी वह लिखते गए। उन्होंने अपनी कहानियों में दलित समाज से जुड़े अनेकानेक विषय उठाए। यही कारण है कि धीरे– धीरे उनकी पहचान एक दलित साहित्यकार के रूप में होने लगी। सांभरिया के कहानी संग्रह में हुकुम की दुग्गी, दलित समाज की कहानियां, काल तथा अन्य कहानियां और एयरगन का घोड़ा शामिल हैं। उनकी अन्य रचनाओं में लघु कथा संग्रह–बांग और अन्य लघु कथाएं और एकांकी संग्रह–समाज की नाक भी शामिल हैं। उन्होंने डॉ. भीमराव अम्बेडकर –एक प्रेरक जीवन पुस्तक का अरबी–सिंधी में अनुवाद किया है। सांभरिया की कहानियां अतीत को प्राथमिकता न देकर वर्तमान पर केंद्रित होती हैं। उनकी अधिक. ांश कहानियों में दलित समाज का बदलता हुआ यथार्थ तथा प्रगति देखने को मिलती है। सांभरिया की रचनाओं को विश्वविद्यालयों के पा. ठ्यक्रम में भी स्थान प्राप्त है। रत्नकुमार सांभरिया ने कई पुरस्कारों को अपने नाम किया है। वह नवज्योति कथा सम्मान से सम्मानित हैं और 'चपड़ासन' कहानी के लिए उपराष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत हैं। 2007 में उन्हें 'खेत' कहानी के लिए राजस्थान पत्रिका सृजनात्मक पुरस्कार मिला। हरियाणा साहित्य अकादमी ने 2017 में उन्हें हरियाणा गौरव सम्मान से नवाजा। 2023 में एक और पुरस्कार सांभरिया के नाम होने जा रहा है। इसमें उन्हें मीरां पुरस्कार मिलेगा। इसके तहत 75 हजार रुपए की पुरस्कार राशि दी जाएगी। साल 2023–24 का पुरस्कार समारोह चूरू में प्रस्तावित है।

दृष्टि बाधित लोगों के लिए एक अच्छा अवसर

इंडियन ब्लाइंड क्रिकेट टीम के सितारे

***इंडियन मेल ब्लाइंड क्रिकेट टीम* के सदस्य नीलेश और इरफान पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। उनसे हमारे संवाददाता शिवांश सक्सेना ने क्रिकेट से जुड़ी लंबी बातचीत की। उस बातचीत का संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश है...**

इरफान और नीलेश, आपका राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम में स्वागत है।

नीलेश– बहुत बढ़िया। थैंक्यू हमें आमंत्रित करने के लिए।

इरफान, ब्लाइंड क्रिकेट को हम किस तरह समझ सकते हैं?

इरफान– ब्लाइंड क्रिकेट जो विजुअली इम्पैरेड पर्सन हैं, उनके लिए एक काफी अच्छी अपॉर्चुनिटी है। अपने देश के लिए कुछ कर दिखाने का और अपने आप को प्रूफ करने का यह अच्छा जरिया है।

नीलेश, क्या नॉर्मल क्रिकेट और ब्लाइंड क्रिकेट के नियम–कायदों में कुछ डिफरेंस होता है?

नीलेश– बिल्कुल, नॉर्मल क्रिकेट के एमसीसी रूल हम भी फॉलो करते हैं। बस उसमें कुछ चेंजेस होते हैं। जैसे कि नॉर्मल क्रिकेट में ओवर आर्म बॉलिंग होती है, वैसे ब्लाइंड क्रिकेट में अंडर आर्म बॉलिंग की जाती है। ब्लाइंड क्रिकेट में 3 कैटेगरी होती हैं। बी 1, बी 2, बी 3, बी 1 वह खिलाड़ी होते हैं जो पूरी तरह से ब्लाइंड होते हैं। बी 2 वह होते हैं जिनका मिनिमम 3 मीटर क्लियर विजन होता है। इसी के साथ बी 3 वह होते हैं जिनका 6 मीटर तक एकदम क्लियर विजन होता है।

और बॉल में भी कुछ अंतर होता है?

नीलेश– बिल्कुल, हमारी बॉल हार्ड प्लास्टिक की होती है। उसमें साइकिल की बैरिंग डाली जाती है, जिसकी वजह से साउन्ड आता है।

बी 1, बी 2 और बी 3 कैटेगरी में कितने–कितने खिलाड़ी होते हैं?

नीलेश– बी 1 में मिनिमम चार खिलाड़ी, बी 2 में तीन और ज्यादा से ज्यादा सात हो सकते हैं। बी 3 में ज्यादा से ज्यादा चार। बी 1 प्लेयर टीम में 8 भी हो सकते हैं।

यह बताइए कि क्या ब्लाइंड क्रिकेट में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टूर्नामेन्ट्स, वर्ल्ड कप, चैम्पियन्स ट्रॉफी टेस्ट चैम्पियनशिप होते हैं।

इरफान– ब्लाइंड क्रिकेट में ट्राइन्गुलर सीरीज होती हैं। अधिकतर बाइलेटरल सीरीज, एशिया कप, और वर्ल्ड कप।

कितने सालों में एक वर्ल्ड कप या फिर टूर्नामेन्ट्स होते हैं?

इरफान– वर्ल्ड कप ओ.डी.आई और टी ट्वेंटी हर चार साल के बाद होते हैं।

ब्लाइन्ड क्रिकेट में कितने फार्मेट्स होते हैं?

नीलेश– ब्लाइन्ड क्रिकेट में सामान्य रूप से दो फार्मेट ही फॉलो होते हैं। टी ट्वेन्टी और ओ.डी.आई।

बेसिक लेवल पर अगर कोई व्यक्ति ब्लाइन्ड क्रिकेट से जुड़ रहा और खेलना शुरू कर रहा है तो इसके बारे में बताइए।

नीलेश– हमारी कम्युनिटी बहुत छोटी है। शहरी इलाकों में तो आसानी से समाचार या अन्य माध्यमों से लोग टीम से जुड़ जाते हैं, लेकिन ग्रामीण इलाकों में ऐसा करना मुश्किल हो जाता है। इसी के साथ पहला स्तर हम लोग स्कूल से शुरू करते हैं। उसके बाद डिस्ट्रिक्ट और स्टेट लेवल का टूर्नामेन्ट। वहां से खिलाड़ियों को चुना जाता है। हमारी नागेश ट्रॉफी होती है, जिसमें 28 राज्य भाग लेते हैं। उसमें 56 खिलाड़ी चुने जाते हैं। उसके बाद उसमें 29 आते हैं और फिर टॉप 17 का चुनाव होता है।

हमारे श्रोताओं के साथ अपनी जीत का अनुभव साझा कीजिए।

इरफान– हमारा पहला ही मैच पाकिस्तान के साथ था तो हमारी यात्रा थोड़ी तनाव के साथ शुरू हुई। पहला मैच हम पाकिस्तान के खिलाफ हार गए थे। उसके बाद हम लगातार मैच जीते। कहीं न कहीं हमारी बॉलिंग नहीं चली। जो बॉलर्स थे, उनके लिए थोड़ा अलग पिच था। और हम फाइनल में हार गए। हमने सिल्वर जीता। हमारे लिए यह एक्सपीरियन्स बहुत अच्छा था।

नीलेश, आप अपना अनुभव इस बारे में बताइए।

नीलेश– इंडिया पाकिस्तान का मैच बाकी मैचों के मुकाबले बेहद प्रेशर वाला मैच होता है। जब फर्स्ट इनिंग हमारी चली थी, हमारी बॉलिंग थी। उस वक्त दस ओवर के बाद उन लोगों ने हमारी टाइमिंग देखकर थोड़ा टाइम वेस्ट करना शुरु किया। उस वजह से हम एक ओवर लेट हुए। 6 रन की एक ओवर की हमें पैनालिटी लगी और आउट फील्ड बाद में बहुत धीमी हो गई थी। उससे भी काफी शॉर्ट नहीं जा रहे थे। बाउंडरी तक प्रेशर में आकर लगातार हमारे तीन रन आउट हुए। फिर एक पल के लिए लगा कि हम मैच जीत जाएंगे। लेकिन अचानक फिर लगातार दो विकेट जाना। वहां से हम मैच हारने लगे। बाकी अनुभव काफी अच्छा रहा। हम चाहते थे कि गोल्ड लेकर आएं और हमने अपनी पूरी कोशिश भी की।

ओवर ऑल ग्राउंड की कंडीशन्स, माहौल में बदलाव जैसा कुछ आपने अनुभव किया?

इरफान– वहां पर मौसम काफी अच्छा था। भारत में हम धूप में प्रैक्टिस करते हैं, वहां मौसम काफी ठंडा था। खेलने में काफी अच्छा लग रहा था। इंग्लैंड की सभी पिचों में घास होती है, जिससे हमारी बॉल अनइवन बॉउंस करती है, क्योंकि हमारी बॉल रोलिंग करते हुए अंडर आर्म जाती है। वह अनइवन बॉउंस होता है और कभी भी विकेट पर लग सकता है। साथ ही साथ स्पिन काफी ज्यादा होता है। वहां बॉउंस के साथ स्पिन खेलने में काफी दिक्कत होती है। बैट्समैन चाहे स्वीप खेलें, चाहे स्ट्रेट बैट खेलें।

क्रिकेट एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड इन इंडिया कैसे काम करती है?

नीलेश– क्रिकेट एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड इन इंडिया डब्लूबीसी वर्ल्ड ब्लाइंड काउंसिल से एफिलेटेड है। इसमें जो भी नियम हैं वह डब्लूबीसी के ही नियम होते हैं। उनका यह पालन करती है। बस उसमें थोड़े बदलाव कर दिए जाते हैं। जैसे यदि बी 1 बैटिंग कर रहा है। स्टंप पर 8 इंच से ऊपर अगर बॉल लगेगी तो नॉट आउट। वह डेड बॉल होगी। 8 इंच से नीचे ही होना चाहिए। बस यही अलग है। बाकी यह रन कॉरपोरेट और अन्य स्पांसर के सहारे करते हैं, क्योंकि सरकार से मदद नहीं मिलती। केबी को कुछ सालों से इंडस इंड बैंक स्पॉन्सरशिप कर रही है। एनटीटी डाटा स्पांसरशिप के सहारे ही चला रही है। एक तरीके से वह हमारी पैरेंट बॉडी है। स्किल डेवलपमेंट, एजुकेशन और जिनके पास कोई रोजगार नहीं है। उन्हें रहने–खाने की सुविधा देना। ऐसी तमाम चीजों के लिए वह निरंतर काम करती है।

कोई व्यक्ति यदि किसी प्रकार से मदद करना चाहे तो वह कैसे एसोसिएशन से जुड़ सकता है?

नीलेश– वर्तमान समय में हमारी क्रिकेट एसोसिएशन के चेयरमैन डॉ जी.के. महंतेश सर हैं। जनरल सेक्रेटरी शैलेंद्र यादव सर हैं। यहां के नॉर्थ जोन सेक्रेटरी योगेश तनेजा सर है। इन तीन लोगों से संपर्क करके एसोसिएशन में आप जुड़ सकते हैं। उसी के जरिये मदद भी की जा सकती है।

किस तरह से कोई आम इंसान मदद कर सकता है?

नीलेश– बिल्कुल, एक्जीक्यूटिव मेंबर भी हो सकते हैं। साथ ही गवर्निंग बॉडी के साथ भी जुड़ सकते हैं। सबसे पहले सदस्य बनना होगा। इस पूरी प्रक्रिया के बाद ही आप उसके अधिकारी बन सकते हैं।

विद्यार्थियों को सीखने के क्रम में रहना चाहिए

विद्यार्थियों ने टाइपिंग, डमी बनाना, लेआउट खींचना और पेज डिजाइन करने की कला सीखी

कविता यादव

नई दिल्ली। हम हमेशा सीखने के उद्देश्य से चीजों को देखते और समझते हैं। विद्यार्थियों को भी सीखने के क्रम में ही रहना चाहिए। यह बात हिंदी पत्रकारिता की दो दिवसीय कार्यशाला में प्रिंट पत्रकारिता के विशेषज्ञ और विभाग के प्राध्यापक डॉ. अटल तिवारी ने कही। विभाग की समिति पत्रकारिता परिषद ने 'समाचार पत्र निर्माण' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। 17 और 18 अक्टूबर को राम लाल आनंद महाविद्यालय में हुई इस कार्यशाला में विभाग के तीनों वर्षों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

पहले दिन विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने कार्यशाला की औपचारिक शुरुआत करते हुए आयोजन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि टाइपिंग और समाचार पत्र निर्माण सीखने से विद्यार्थियों के लिए प्रिंट पत्रकारिता के लिए द्वार खुल जाते हैं। इसी उद्देश्य के तहत यह कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इन्हीं शब्दों के साथ हम अपने साथी डॉ. अटल तिवारी का स्वागत करते हैं। डॉ. अटल तिवारी ने शुरुआत में पीपीटी के माध्यम से समाचार पत्र निर्माण के बुनियादी बिंदुओं से विद्यार्थियों को अवगत करवाया। इसी के साथ हिंदी टाइपिंग और समाचार पत्र निर्माण वाले सॉफ्टवेयर क्वॉर्क एक्सप्रेस का महत्व बताया।

समाचार पत्र बनाने में उपसंपादक की भूमिका व उसकी जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि किस तरह एक उपसंपादक अखबार का राजा होता है। अखबार को बेहतर रूप में ढालना उपसंपादक के हाथ में होता है। कैसे एक अखबार को रचनात्मकता, कल्पना और कौशल की मदद से आकर्षक बनाया जा सकता है। विशेषज्ञ ने विद्यार्थियों को समाचार पत्र पढ़ने की महत्ता बताई। पहले दिन कार्यशाला के अंत में विद्यार्थियों को एक पृष्ठ में लेआउट खींचकर लाने का गृह कार्य दिया गया।

कार्यशाला के दूसरे दिन सभी विद्यार्थियों ने अपना–अपना पृष्ठ एक–दूसरे के साथ साझा किया। लेआउट में कमियां निकालीं। विशेषज्ञ शिक्षक ने भी कुछ एक लेआउट में कमियां बताईं और पृष्ठ बेहतर बनाने के सुझाव दिए। कुछ विद्यार्थियों के प्रसायों की प्रशंसा भी की गई। पृष्ठ में खबरें व्यवस्थित करने की बारीकियां बताई गईं। साथ ही शब्दों के सही चयन का महत्व बताया गया। न्यूज हाउस में विभिन्न विभागों की भूमिका को भी रेखांकित किया गया। इस दो दिवसीय कार्यशाला से विद्यार्थियों ने डमी निर्माण, लेआउट खींचना, डिजाइन और पेज मेकअप करना सीखा।

अंत में विशेषज्ञ डॉ. अटल तिवारी ने विद्यार्थियों को रंग योजना की भूमिका समझाई और पृष्ठ सज्जा के लिए सुझाव दिए। विद्यार्थियों ने कुछ प्रश्न भी पूछे। आखिर में विशेषज्ञ ने इस आयोजन के लिए पत्रकारिता परिषद का धन्यवाद करते हुए बताया कि किस तरह लगातार प्रयास करने से विद्यार्थी खुद को बेहतर बना सकते हैं। कार्यशाला में विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार व शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार भी उपस्थित रहे।

पृथ्वी बचाने का संदेश

जया सिंह

नई दिल्ली। आखिर किस प्रकार पृथ्वी को आपदा से बचाया जा सकता है? पृथ्वी और विज्ञान से जुड़े ऐसे अनेक अहम प्रश्नों से जुड़ी बातें दिल्ली विश्वविद्यालय के भू विज्ञान के प्राध्यापक विमल सिंह ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 13 अक्टूबर को भू विज्ञान विभाग की समिति टेरेक्स के आयोजन में कही।

पृथ्वी विज्ञान सप्ताह हर वर्ष अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में मनाया जाता है। इस साल पृथ्वी विज्ञान सप्ताह 8 से 14 अक्टूबर के बीच मनाया गया। इसी अवसर पर टेरेक्स की ओर से एक लेक्चर रखा गया था, जिसका विषय था 'भारत की भू–आकृति विज्ञान संबंधी चुनौतियों को उजागर करना : अंतर्दृष्टि और निहितार्थ'। अपने वक्तव्य के दौरान विमल सिंह ने पृथ्वी से संबंधित अनेक रोचक बातें विद्यार्थियों को बताई। मसलन–किस प्रकार आपदाओं से पृथ्वी को बचाया जा सकता है। विज्ञान की इसमें क्या भूमिका है, अंत में एक प्रश्नोत्तर सत्र भी रख गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अतिथि वक्ता से कई सवाल पूछे।

इसी कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विषय विद्यार्थियों को दिए गए। दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर प्रतिभागियों को पोस्टर बनाना था। पृथ्वी, वातावरण तथा भू–भाग से जुड़े विषय प्रतियोगिता में शामिल थे। प्रतियोगिता की प्रथम विजेता अंग्रेजी विभाग की सानवी रही। द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः इतिहास विभाग के शाश्वत यादव व कंप्यूटर विज्ञान विभाग की निकिता पठानिया को मिला।

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में पोस्टर बनाती छात्रा।

विद्यार्थियों ने सफाई के प्रति सचेत किया

राहुल

नई दिल्ली । राम लाल आनंद महाविद्यालय ने परिसर में एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। इस अभियान में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने सहयोग किया। पत्रकारिता विभाग के सभी छात्र सुबह 10 बजे मीडिया लैब के पास इकठ्ठा हुए, जहां विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने छात्रों को 'स्वच्छ भारत अभियान' और सफाई के महत्व के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि स्वच्छता और हाथ से हाथ मिलाने के महत्व को समझें। छात्रों ने परिसर में सफाई अभियान भी चलाया।

पर्यावरण के प्रति रुझान

खुशी चौहान

नई दिल्ली । दिल्ली विवि के राम लाल आनंद महाविद्यालय की हीरव–द ग्रीन कैंपस समिति ने विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह समिति हरे–भरे परिसर और हरियाली के विचार पर जोर देती है। हीराव समिति हरित पर्यावरण के विचार को मद्देनजर रखते हुए हर वर्ष कई कार्यक्रम करती है। इसी क्रम में 31 अक्टूबर को महाविद्यालय परिसर में सुबह 11 बजे हीराव समिति ने एक निबंध लेखन प्रतियोगिता करवाई।

निबंध लेखन प्रतियोगिता का विषय समिति के मुख्य उद्देश्यों से संबंधित ही रखा गया। पहला विषय 'हरित भूमि को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम तथा चुनौतिया' था। दूसरा विषय था 'फार्माकल्चर : क्या और क्यूं'। निबंध लेखन प्रतियोगिता में शब्द सीमा 1500 थी।

प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे सभी प्रतिभागियों को ई सर्टिफिकेट भी मुहैया कराए गए। साथ ही विजेताओं को नकद पुरस्कार भी दिए गए। प्रतियोगिता में अनेक प्रतिभागियों ने अपनी लेखन प्रतिभा प्रदर्शित की। समिति हर महीने ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास करती है, जिससे युवा पर्यावरण के प्रति जागरूक तथा जिम्मेदार बनें।

फुले–पेरियार–अंबेडकर के योगदान पर प्रश्न

आस्था

नई दिल्ली। फुले, पेरियार और अंबेडकर कौन हैं, समाज में इनका क्या योगदान रहा, ऐसे ही कुछ प्रश्न फुले, पेरियार और अम्बेडकर स्टडी सर्किल के ऑडिशन में प्रतिभागियों से पूछे गए।

स्टडी सर्किल महाविद्यालय में विद्यार्थियों को समाज सुधारकों के प्रति सचेत करने का कार्य करता है। 26 अक्टूबर को स्टडी सर्किल ने ऑडिशन रखा था। उसमें शामिल होने वाले प्रतिभागियों से कई सवाल पूछे गए। उनसे सुझाव भी लिए कि आखिर कैसे समाज सुधारकों की छवि छात्रों के मन में जीवित रखा जाए।

गांधी ने सारे संसार को रोशनी की राह दिखाई : अरुण त्रिपाठी

आर्यन यादव

नई दिल्ली । "हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के" देशभक्ति के लिए अनेक गीत लिखने वाले कवि प्रदीप इन बोल से महाविद्यालय के उप–प्राचार्य और गांधी स्टडी सर्कल के संयोजक सुभाष चन्द्र डबास ने 'गांधी जी का युवा मन' कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत की। यह कार्यक्रम गांधी स्टडी सर्कल ने 20 अक्टूबर को सेमिनार कक्ष में आयोजित कराया। 'गांधी जी का युवा मन' विषय की प्रासंगिकता और युवाओं के मन में राष्ट्रपिता गांधी के लिए स्थान का अंदाजा सेमिनार कक्ष में उमड़ी विद्यार्थियों की भीड़ से लगाया जा सकता था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और विशेषज्ञ के रूप में अरुण त्रिपाठी आए थे। अरुण त्रिपाठी का नाम भारत के जाने–माने पत्रकार, लेखक, अनुवादक, मीडिया अध्यापक और विचारकों में शुमार है।

अपने वक्तव्य की शुरुआत में अरुण त्रिपाठी विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि गांधी को लेकर युवाओं से बात करने में ही मुझे सार्थकता नजर आती है, क्योंकि विद्यार्थी ही इस देश का भविष्य हैं, उनके भीतर गांधी की सकारात्मक छवि होना बेहद जरूरी है, न सिर्फ देश के विकास के लिए बल्कि उनके स्वयं के हित के लिए भी। वर्तमान परिदृश्य की ओर इशारा करते हुए वह इजराइल बनाम फिलिस्तीन के मुद्दे को सभ्यता का पाखंड बताते हैं। अगर हमें सभ्यता को बचाना है तो गांधी को बचाना होगा। वह कहते हैं कि आतंकवाद खत. रनाक है पर सत्ता का आतंकवाद ज्यादा खतरनाक और विनाशी होता है। उनके अनुसार युवा मन वह है जो कभी हार न माने, जहां प्रेम हिलोरे मारे।

वह कहते हैं कि गांधी ने सारे संसार को रोशनी की राह दिखाई। गांधी का एक अनुभव साझा करते हुए अरुण त्रिपाठी बताते है कि गांधी को हरिश्चंद नाटक काफी पसंद था। उन्होंने भी अपने जीवन में सत्य के लिए वैसे ही कष्ट झेले जैसे हरिश्चंद ने झेले थे। पहले गांधी कहते थे कि ईश्वर ही सत्य है, लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि सत्य ही ईश्वर है। यह वक्तव्य कहीं न कहीं आस्तिक और नास्तिक दोनों के लिए पूर्ण है। वह कहते हैं कि यह बेहद दुखद है कि जहां एक तरफ गांधी की प्रभावी छवि लोगों के मन में बसी हुई है वहीं दूसरी ओर समाज का एक बड़ा हिस्सा गांधी से घृणा करता है।

अरुण त्रिपाठी अपने मन में बसे गांधी को याद करते हुए बताते हैं गांधी बाहर से जितने सरल, साधारण हैं वह भीतर से उतने ही दृढ़ व जटिल हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को उपसंहार उपन्यास (कृष्ण के अंतिम दिनों पर केंद्रित) और महात्मा गांधी : द लास्ट फेज किताब (गांधी के अंतिम दिनों पर आधारित) भी पढ़ने की सलाह दी। आजादी में महिलाओं की भागीदारी को लेकर अरुण त्रिपाठी कहते हैं सत्याग्रह में महिलाओं का बड़ा योगदान रहा। इसके साथ ही कस्तूरबा गांधी के योगदान की भी अरुण चर्चा करते हुए बताते है कि सत्य का तत्व गांधी ने भारतीय चिंतन परंपरा से लिया, लेकिन आज के समय में पूरे विश्व में धर्म की श्रेष्ठता की होड़ लगी हुई है। इजराइल बनाम फिलिस्तीन और यूक्रेन बनाम रूस जैसे उदाहरण देते हुए अरुण बताते हैं यह मानवता का विनाश है। महाभारतकाल में भी युद्ध के नियम कई हद तक माने गए थे लेकिन आज आधुनिक कही जाने वाली 21वी सदी में इसका बिलकुल उलट है। जिस दिन दुनिया गांधी को समझने लगेगी, उस दिन दृश्य कुछ और ही होगा।

अरुण त्रिपाठी कहते हैं जो देश आपस में लड़ रहे हैं उन्हें हथियार की नहीं बल्कि गांधी की जरूरत है। वक्तव्य के अंत में अरुण त्रिपाठी रानी लक्ष्मीबाई और भगत सिंह के देश प्रेम और बलिदान का जिक्र करते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। गांधी स्टडी सर्कल के सह–संयोजक प्रो. संजय कुमार शर्मा ने अतिथि वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पूरे वक्तव्य की प्रशंसा की। इस मौके पर प्राध्यापक डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी, डॉ. प्रज्ञा देशमुख, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. राजेन्द्र कुमार, डॉ. नीरा पाल, डॉ. अटल तिवारी सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

सच बयां करती 'वद्ज्दा'

खुशी शाक्य

नई दिल्ली । औरतों की आवाज ऊंची नहीं होनी चाहिए। सिर ढका रहना चाहिए। बाल लंबे होने चाहिए। वह नाच–गा नहीं सकतीं। वह साइकिल नहीं चला सकतीं। ऐसी ही अनेक पाबंदियों से घिरा है सऊदी अरब में स्त्रियों का जीवन। उनका यह जीवन हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की पत्रकारिता परिषद की ओर से 27 अक्टूबर को 'वद्ज्दा' फिल्म की स्क्रीनिंग में देखने को मिला। फिल्म की कहानी समाज का सच बयां करती है। जहां धर्म के नाम पर महिलाओं पर अनेक बंदिशें लगाई जाती हैं।

इन बंदिशों के बारे में बात करते हुए विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने स्क्रीनिंग की औपचरिक शुरुआत की। उन्होंने बताया कि यह फिल्म सऊदी अरब में शूट की गई पहली फीचर फिल्म है। यह एक सच्ची घटना से प्रेरित है। आगे वह महसा अमिनी का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि कैसे धर्म के नाम पर स्त्रियों पर अनेक पाबंदियां थोप दी जाती हैं, जिन्हें न मानने पर उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। वह कहते हैं कि इस फिल्म के माध्यम से विद्यार्थी एक पूरे समाज को जान सकते हैं। फिल्म एक ऐसी बच्ची की कहानी है, जो कई सपने बुनती है, जिसे आजादी से घूमना पसंद है।

'वद्ज्दा' अपने दोस्त के साथ साइकिल रेस करना चाहती है, पर सऊदी अरब के कड़े कानूनों के कारण उसे साइकिल चलाने से रोका जाता है। फिल्म महिलाओं के दर्द को दर्शाती है, जिसमें पुरुष वर्चस्ववाद के कारण महिलाओं को अपनी इच्छाओं को मारना पड़ता है। अंत में प्रो. राकेश कुमार बताते हैं कि फिल्म में साइकिल एक बच्ची की आजादी का प्रतीक है, जिसे वह आखिरकार हासिल कर लेती है। पत्रकारिता परिषद की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि भविष्य में इस तरह की फिल्म प्रदर्शनी और करवाई जाएगी। इस मौके पर विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी सहित तीनों वर्षों के विद्यार्थी मौजूद रहे।

'अभिव्यक्ति' से मिला सम्मान भूल नहीं सकता

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली । 'अभिव्यक्ति' के सदस्यों से मुझे हमेशा सम्मान और सहायता मिली, जिसका मोल शायद मैं कभी न चुका सकूं। मैं खुद को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूं कि मैं अपने महाविद्यालय जीवन में 'अभिव्यक्ति' समिति का हिस्सा रहा। यह समिति के पूर्व अध्यक्ष रवि सिंह के शब्द हैं। राम लाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी रचनात्मक लेखन समिति 'अभिव्यक्ति' ने तीन नवंबर को महाविद्यालय में विमर्श एक का आयोजन किया। इसमें समिति से जुड़े नए सदस्यों का परिचयात्मक सत्र हुआ। साथ ही समिति से संबंधित नीतिगत विषयों पर चर्चा की गई, जिसमें समिति की पूर्व संयुक्त सचिव दीपशिखा भी शामिल हुईं।

सबसे पहले समिति का हिस्सा रह चुके रवि सिंह और दीपशिखा का स्वागत किया गया। समिति के सदस्यों ने अपनी स्वरचित कवितायें, कहानियां आदि प्रस्तुत कीं। इसी के साथ समिति के

अभिव्यक्ति समिति के पूर्व अध्यक्ष रवि सिंह ने नए सदस्यों को संबोधित कर अपनी रचना का पाठ किया।

अध्यक्ष रहे रवि सिंह ने अपने वक्तव्य की शुरुआत एक स्वरचित कविता से की। आगे उन्होंने समिति और समिति के सदस्यों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए कहा कि अभिव्यक्ति के सदस्यों से मेरा जुड़ाव हमेशा रहेगा। राम लाल आनंद महाविद्यालय में आने का मेरा मुख्य कारण अभिव्यक्ति समिति ही थी। वह भले ही गणित विशेष के विद्यार्थी रहे, लेकिन हिंदी के प्रति उनकी रुचि ने उन्हें अभिव्यक्ति समिति की ओर खींचा। समिति की संयुक्त सचिव रह चुकी दीपशिखा ने भी अभिव्यक्ति के प्रति अपना जुड़ाव साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार महाविद्यालय में अभिव्यक्ति ने उन्हें वह वातावरण दिया, जिसमें वह बेबाक तरीके से अपनी रचनाओं को प्रस्तुत कर पाईं। अभिव्यक्ति समिति हिंदी के प्रति विद्यार्थियों के मन में रुचि बढ़ाने का कार्य करती है। इसी के साथ उन्होंने महिला सशक्तिकरण पर आधारित एक कविता प्रस्तुत की। अहमद फराज की मशहूर नज्म 'भले दिनों की बात है' सुनाई। अंत में दोनों ने समिति के सभी सदस्यों को नए बैज देकर सम्मानित किया। समिति के उप संयोजक डॉ. रोशन लाल मीणा के निर्देशन में पूरा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

किरदारों के गम ले लेता हूं: पंकज त्रिपाठी

निशा मिश्रा

नई दिल्ली । 'एक बेहतर इंसान बनने के लिए मैं अपनी खुशियां किरदारों को दे देता हूं और उनके गम ले लेता हूं।' यह शब्द हिंदी फिल्मों के प्रख्यात अभिनेता पंकज त्रिपाठी के हैं। ढाई आखर प्रेम के नेशनल कल्चरल जत्था के तहत 17 से 19 अक्टूबर तक दिल्ली के हरिजन सेवा संघ में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय चरखा कताई एवं थिएटर कार्यशाला था। अभिनय कला और सांस्कृतिक विरासत के महत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह कार्यशाला की गई।

पंकज त्रिपाठी के साथ प्रमुख भारतीय रंगमंच निर्देशक और नाटककार प्रसन्ना भी मौजूद थे। कार्यशाला के दौरान पंकज त्रिपाठी और प्रसन्ना ने प्रतिभागियों को अभिनय जगत से जुड़ी अहम बातें बताई। अच्छा अभिनय करने

थिएटर कार्यशाला को पंकज त्रिपाठी और प्रसन्ना ने संबोधित किया।

की तकनीकें सिखाईं। इसके साथ ही अपने अनुभव साझा किए। कार्यशाला के दौरान विभिन्न राज्यों से आए युवा कलाकारों ने चरखा कताई और नृत्य की दुनिया में कौशल का प्रदर्शन किया। कार्यशाला में अभिनय के बुनियादी सिद्धांत प्रेम, श्रमदान और बंधुत्व का संदेश दिया गया। इस त्रिदिवसीय कार्यशाला ने अभिनय और कला के प्रति नवाचारी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से युवा पीढ़ी को कला के क्षेत्र में दक्षता विकसित करने का मौका मिल पाया। साथ ही महात्मा गांधी के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया गया। कार्यशाला संचालन में डॉ. अंकुश गुप्ता, राकेश सिंह, लोकेश जैन और वर्षा ने भी सहयोग किया। साथ ही बड़ी संख्या लोगों ने हिस्सा लिया।

अच्छी फोटो क्लिक करना सीखें

अफसाना

नई दिल्ली । राम लाल आनंद महाविद्यालय के फिल्म एंड फोटोग्राफी क्लब 'दृश्यम' ने कार्यशाला का आयोजन किया। 'डीएसएलआर की मूल बातें' विषय पर 20 अक्टूबर को महाविद्यालय के मुख्य प्रांगण में कार्यशाला की गई।

कैमरा उपयोग करते समय ध्यान में रखी जाने वाली बातों को कार्यशाला में बताया गया। मसलन–फोटोग्राफी में लाइट और लेंस कितने प्रकार के होते हैं, कैमरा में विभिन्न मोड आदि के बारे में विस्तार से बताया गया। इसके साथ ही कैमरे से जुड़ी कई सावधानियां बरतने की सलाह भी विद्यार्थियों को दी गई। इसके साथ ही कार्यशाला के अंत में विद्यार्थियों को कैमरा देकर अच्छी फोटो खींचने का प्रयास भी करवाया गया।

तनाव के कारण बताए और बचने के उपाय भी

आशा

नई दिल्ली । हमारा स्वस्थ जीवन हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। जीवन में मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करने की आवश्यकता होती है, ताकि मनुष्य तनाव मुक्त महसूस करे। इस साल विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में रामलाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना ने एक जागरूकता सत्र का आयोजन किया।

सत्र का विषय 'मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता' था। महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में जयन्त सुंदरेशन थे। वह क्यूरेक्स में सलाहकार मनोचिकित्सक हैं। सत्र में एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी प्रो. अनुराग मौजूद रहे। सत्र के दौरान जयन्त सुंदरेशन ने तनाव के मुख्य कारण, तनाव प्रबंधन, वित्तीय स्थिरता और प्रभावी संचार आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट किए। आयोजन का मुख्य आकर्षण यह था कि यह एक खुला मंच था, जहां विद्यार्थी अपने सवाल पूछ सकते थे।

इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के विचार पर बातचीत करके विद्यार्थियों में इसके प्रति जागरूकता फैलाई गई। सत्र में न केवल जागरूकता की बात की गई बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के मूल्य को समझने के साथ–साथ विद्यार्थियों को इसकी व्यावहारिक जानकारी भी दी गई।

इसके साथ ही साथ भावनात्मक स्थिरता बनाए रखने के लिए सलाह दी गइ। यह सत्र विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के क्षेत्र में एक अच्छा कदम रहा।

अपनी भाषा की शक्ति का अहसास होना जरूरी है : फ्रेंचेस्का ओर्सिनी

अरविंद सिंह

नई दिल्ली । 'हर भाषा की एक शक्ति होती है। हमें अपनी भाषा की शक्ति को समझना चाहिए व उसका अहसास होना चाहिए। हम सदियों से देखते आ रहे हैं कि हिन्दी और उर्दू के बीच निरंतर प्रतिस्पर्धा चली आ रही है, लेकिन हमें यह समझने की जरूरत है कि एक भाषा के आगे बढ़ने का मतलब दूसरी भाषा का खत्म होना बिल्कुल नहीं होता। यह बात राजकमल प्रकाशन और गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के एक साझा आयोजन के दौरान प्रो. फ्रेंचेस्का ओर्सिनी ने कही।

प्रथम सामाजिकी व्याख्यान पर आधारित यह आयोजन 11 अक्टूबर को इंडियन

सामाजिकी व्याख्यान में प्रो. बद्री नारायण व प्रो. फ्रेंचेस्का ओर्सिनी ने रखे विचार।

इंटरनेशनल सेंटर में हुआ। हिन्दी में समाज विज्ञान और मानविकी की त्रैमासिक पत्रिका 'सामाजिकी' का यह पहला व्याख्यान था। यह पत्रिका भारतीय समाज में हो रहे महत्वपूर्ण बदलावों को समझने व दूसरों को समझाने के लिए शोध पर आधारित है। इसमें हिन्दी के लेख, साक्षात्कार और पुस्तक समीक्षाएं शामिल हैं।

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए संपादक प्रो. बद्री नारायण ने सामाजिकी और व्याख्यान का परिचय दिया। तत्पश्चात यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज में हिंदी की प्रोफेसर फ्रेंचेस्का ओर्सिनी ने 'साहित्य के इतिहास की प्रासंगिकता : क्यों और कैसे?' विषय पर बोलते हुए कहा कि हर भाषा की एक शक्ति होती है। हमें अपनी भाषा की शक्ति का अहसास होना जरूरी है। प्रामाणिक इतिहास ठोस दस्तावेज के आधार पर लिखा जाता है। कुछ इसी तरह साहित्य के इतिहास का पता हमें तत्कालीन समय के साहित्य को जांचने पर चलता है। उस समय के साहित्य को बेहद बारीकी से देखने व समझने पर हम उसके इतिहास का भी पता लगा सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुभद्रा मित्र चानना ने की।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
आदित्य कनोजिया
संपादकीय सहयोग
मीनाक्षी पंत